लेखन में नियम नहीं चलते : ममता कालिया

नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता। लेखन ऐसी दुनिया है, जिसमें कोई नियम नहीं चलता। कभी-कभी हमारे किरदार ही हमें फेल कर देते हैं। हम किरदारों को गढ़ना शुरू करते हैं, लेकिन वह आगे नहीं बढ़ पाते। उक्त बातें साहित्य अकादमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'लेखक से भेंट' में सोमवार को लोकप्रिय और प्रख्यात लेखिका ममता कालिया ने पाठकों से रुबरु होते हुए कही।

अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि घर में सबसे छोटी होने के कारण मेरी बहुत सी जिज्ञासाओं के जवाब नहीं मिल पाते थे। साथ ही बड़ी बहन के बेहद सुंदर होने से मुझे मेरे सांवले रंग के कारण जगह-जगह अपमानित होना पड़ता

साहित्य अकादमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'लेखक से भेंट' का आयोजन

था। ऐसे में अपना गुस्सा निकालने और अपने को विशेष कहलाने के लिए मैंने लेखन का सहारा लिया। मुझे साबित करना था कि मैं भी कुछ हूं। इस सब में मेरे पिता की किताबों ने मेरा बेहद साथ दिया। किताबें ऐसी मित्र होती है, जो हमें चेतना देती हैं और कभी नीचा नहीं दिखाती।

उन्होंने बताया कि उनका प्रारंभिक लेखन अंग्रेजी में एमए करने के कारण अंग्रेजी में ही था, लेकिन बाद में इलाहाबाद में रहते हुए उन्हें हिंदी में लिखने के लिए विवश होना पड़ा। इसमें मेरे पति रवींद्र कालिया का भी योगदान था।

वर्तमान लेखन पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि अब पठन-पाठन के कई नए माध्यम आ गए हैं और उनमें आपस में प्रतिस्पर्धा चल रही है, लेकिन आभासी मंचों पर संतुष्टि प्राप्त नहीं होती है। उन्होंने कहा कि छोटे शहरों में अभी भी अध्यनशीलता, सृजनशीलता और पाठन की परंपरा है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका स्वागत किया।